Indian Scholar
ISSN 2350-109X
www.indianscholar.co.in
An International Multidisciplinary Research e-Journal

महाकवि भूषण की राष्ट्रीयता

प्रतिभा पाण्डेय
सहा.प्राध्यापक
हिन्दी विभाग
शास.स्नातकोत्तर स्वशासी
महाविद्यालय दतिया (म.प्र.)

भारतीय इतिहास का उत्तर मध्यकाल जिसे हिन्दी साहित्य का रीतियुग अथवा उत्तरमध्यकाल कहा जा सकता है। इतिहास और साहित्य दोनों ही अनेक दृष्टियों से विचारणीय है। यह बात अलग है कि केन्द्र में मुगल सत्ता की निरंकुशता और उसके अनुग्रह पर आश्रित छोटे बड़े देशी रजबाड़ों की की विवशता भारतीय संस्कृति, राष्ट्रीयता और अतीत गौरव के भाव हृास में परिणत हो रहे थे। जहॉ अधिकतर देशी राज्य सशर्त स्वतंत्रता के अन्तर्गत विलासिता और सत्ता की अनैतिकता का भोग कर रहें थे नहीं शिवाजी और छत्रसाल विदेशी सत्ता से निरंतर टकराते हुए राष्ट्रीयता और वास्तविक स्वतंत्रता के उदस्त उद्देश्य से प्रेरित थे। महाराष्ट्र और बुन्देलखण्ड में अपने ही पड़ौसी राज्यों की गुलाम मानसिकता के विपरीत शिवाजी और छत्रसाल राष्ट्र का अपना मानचित्र गढ़ने के लिए जूझ रहे थे।

देशी राज्यों के आश्रम में रहने वाले कवि अपने आश्रयदाता व राजाओं की वीरता या यश का जो वर्णन कर रहे थे वह कवि कर्म था, स्वतंत्र काव्य – चेतना नहीं। श्रृंगार के अतिरिक्त कुछ ईश्वर भक्ति और राजाओं की प्रशस्ति परक कविता की प्रवृत्ति बन गयी थी पर भूषण स्वतंत्र काव–चेतना के अन्तर्गत सच्ची राष्ट्रीय भावना से प्रेरित होकर ऐसा काव्य लिख रहे थे जिसे वास्तविक अर्थ में वीरकाव्य कहा जा सकता है। इसलिए भूषण के अपने समय के दो स्वातंत्रय–चेता वीर नामकों को अपनी कविता का आलम्बन बनाया। भूषण की राष्ट्रीय चेतना इस बात से प्रमाणित होती है। कि उन्होंने बार–बार धर्म, संस्कृति और हिन्दु जाति की रक्षा के संदर्भ लिये है, शिवाजी और छत्रसाल की वीरता इन्हीं के लिये समर्पित है।

कोई राजा किसी प्रशस्ति गायक कवि को सम्मान और सम्पत्ति चाहे जितनी देदे उसे वह गौरव नहीं दे सकता जो छत्रसाल ने भूषण को दिया। छत्रसाल ने भूषण की पालकी में कंधा लगाया यह छत्रसाल की राष्ट्रीयता का ही परिचायक है और भूषण की राष्ट्रीयता कविता का असाधारण सम्मान भी। 'छत्रसाल दशक' में छत्रसाल की बरछी की प्रशंसा इसीलिए करते हैं क्योंकि उसने 'खलों' को नष्ट किया है–

भुज भुजगेस की बैसंगिनी भुजंगिनी सी,
खोदि–खोदि खाती दीह दारून दलन के।
बखतर पाखरनि बीच धॅसि जाति मीन,
पैरि जात परवाहु ज्यों जलन के।।
रैयाराव चंपति की छत्रसाल महाराज,
भूषण सकत की बखानि यों बलन के।
पच्छी परछीने ऐसे परे परछीने वीर,
तेरी बरछीने बर छीने हैं खलन के।।

छत्रसाल की तलवार 'कालिका सी किलक' है।

भूषण की चेतना जातीय भावना अर्थात हिन्दु जाति की चेतना के रूप में सीमित नहीं थी। हिन्दु उनके लिए जाति नहीं बल्कि राष्ट्र का परिचायक था। उसके आशय व्यापक थे, संकीर्ण नहीं, सांस्कृतिक थे, साम्प्रदायिक नहीं।

रीतिकालीन कवियों ने वीरभावों की अभिव्यक्ति दो प्रकार से की हैं प्रबन्ध काव्य द्वारा, मुक्तक काव्य द्वारा। भूषण मुक्तक वीर काव्यों के कवि हैं। राष्ट्र केवल भौगोलिक अस्तित्व नहीं।

राष्ट्र उस जनसमूह को कहते हैं जो किसी एक निश्चत भू–खण्ड पर रहता है, जिसकी एक संस्कृति, धर्म, साहित्य, भाषा, कला, आदि की ऐतिहासिक परम्परा होती है, सामाजिक एवं शासकीय व्यवस्था भी एक परम्परागत विचारधारा पर संचालित होती है, और सम्पूर्ण जन–जीवन में भावात्मक एकता रहती है।

इस प्रकार जो कवि राष्ट्र को सर्वोपरि मानकर स्वदेश और देश के प्रति अनुराग व्यक्त कर, समाज को उन्नत करने का प्रयास करता है, संस्कृति के तत्त्वों का प्रचार करता है तथा निर्बल राष्ट्र को सबल बनाने के लिए प्रत्यनशील हो जनता में बन्धुत्व भाव जाग्रत करता है, विश्रृंखलित जन समूह को संगठित करने का प्रयास करता है उस कवि को राष्ट्रीय कवि मात्र जा सकता है।

हिन्दी–काव्य के रीतिकाल तक हिन्दी–वीर–काव्य एक सुदीर्घ परम्परा मिलती है। हिन्दी का रीतिकाल जो वीर गाथाओं के कारण 'वीरगाथा काल' ही कहलाता है। वीरगाथा काल को 'आदिकाल' कहा गया। इस काल में जो वीर–काव्य लिखे गए उन्हें चारण या भाटकृत वीर काव्य और जैन कवियों द्वारा वीरकाव्य कहा गया। रीतिकाल में श्रृंगार काव्य लिखे गये। वीर काव्यों में 'पृथ्वीराज रासो' , 'आल्हखंड' लिखा गया। मलिक मुहम्मद जायसी ने 'पदमावत' में भी 'गोरा बादल युद्ध का वर्णन' किया है।

हिन्दी के रीतिकाल रीतिग्रंथो की प्रधानता रही, जिसमें श्रृंगार की प्रधानता रही। इस समय भारत में अशांति छाई हुई थी युद्ध होते रहते थे। अतः वीरों में उत्साह और जोश भरने के लिए वीरसात्मक काव्यों की रचना हुई।

इस समय जो वीरकाव्य लिखे गए वह युद्ध वीरकाव्य, अनूदित वीरकाव्य, दरबारी कवियों के वीर काव्य, आदि। युद्ध वीर काव्य लिखने वाले 'भूषण' का स्थान रीतिकालीन कवियों में सर्वोपरि है। हिन्दी कवियों के काव्य में वीरकाव्य के साथ श्रृंगार, शान्तरस, भी है परन्तु भूषण को वीरकाव्य वीरता से ओत प्रोत है। 'भूषण' के दो नायक शिवाजी, छत्रसाल राष्ट्र विरोधी शक्तियों को मिटाने में लगे हुए थे। वे अत्याचार, अन्याय का दमन कर रहे थे। भूषण ने आश्रय दाताओं की प्रशंसा में चाटुकारिता पूर्ण काव्य रचना नहीं की वरन् उन्होंने उस यथार्थ स्थिति का चित्रण अपने काव्य में किया जो उस समय हो रहा था।

रामाचन्द्र शुक्ल ने लिखा है ''शिवाजी और छत्रसाल की वीरता के वर्णनों को कोई कवियों की झूठी खुशामद नहीं कह सकता है। वे आश्रयदाताओं की प्रशंसा की प्रथा के अनुसरण मात्र नहीं हैं। दो वीरों का जिस उत्साह के साथ सारी हिन्दू जनता स्मरण करती है उसी की व्यंजना भूषण ने की है। वे हिन्दू जाति के प्रतिनिधि है।''[1]

देशभक्ति जब सर्वथा लुप्त हो गयी थी, राष्ट्रीय भावना समाप्त हो गयी थी, विदेशी शासक ही प्रजा पर अत्याचार कर रहा था, तब भूषण के हृदय में राष्ट्रीय भावना का प्रस्फुरण हुआ। उनमें देशभक्ति की जो लहर उठी तो ऐसे नायक सामने दिखे जो तत्कालीन पत्मोन्मुख राष्ट्र की रक्षा करने एवं भारत को विदेशी शक्तियों से बचाने में लगे थे। भूषण उत्तर से दक्षिण की ओर गए। इन्द्र विद्या वाचस्पति के अनुसार– ''शिवाजी ने थोड़े ही वर्षों में जहाजी बेड़ा बनाकर इतना मजबूत बना दिया कि वह मुगल, सीरी, अंग्रेज, और पुर्तगाल जातियों से टक्कर ले सकें इससे स्पष्ट होता है कि उस दूरदर्शी महापुरूष ने देख लिया थ्ज्ञा कि हिन्दुस्तान का भविष्य निर्णय मैदान पर नहीं समुद्र पर होगा।''[2]

सर देसाई ने लिखा है–''मराठों को कम से कम इस बात का श्रेय देना पड़ेगा कि उन्होंने पश्चिमी भारत पर अंग्रेजों का आक्रमण लगभग पचास वर्षों के लिए टाल दिया।''[3]

भूषण ने ऐसे दो वीरों का यशोगान किया जिन्होंने भारत की रक्षा की तथा सामाजिक, धार्मिक, अर्धःपतन को रोका। भूषण ने जहॉ औरंगजेब को खरीखोटी सुनाई वहीं बाबर, हुमायूँ और अकबर की प्रशंसा की ''बब्बर अकबर हुमायूँ हद बांधि गए।

हिन्दु औ तुष्क की कुरान वेद ढबकी।।''

परन्तु औरंगजेब ने आलमगीर की उपाधि प्राप्त की तो अपने पूर्वजों का यश भूल गया और भारत पर अत्याचार करने लगा ऐसे समय सभी भारत के राजा औरंगजेब के विरूद्ध आवाज नहीं उठा सके। वह सर्वत्र हिन्दू देव मंदिरों को गिराया जा रहा था, हिन्दुओं का शक्तिपूर्वक धर्म परिवर्तन कराया जा रहा है। संस्कृति पर निरन्तर आघात हो रहे थे।

देवल गिरावते फिरवते निसान अली,
ऐसे समै राव–राने सर्वे गए लवकी।
गौरा गनपत्ति आप, औरंग की देखि ताप,
अपने मुकाम सब मारि गए लबकि।
कासीहू की कला गई मथुरा मसीद मई,
सिवाजी न होतो तो सुनति होती सबकी।।

भूषण ने किसी जाति विशेष के लिए काव्य नहीं लिखा उन्होंने सभी धर्मों की रक्षा के लिए आवाज उठाई। यदि ने अत्याचार के विरूद्ध आवाज न उठाई होती तो भारत राष्ट्र बहुत पहले विदेशी कुचक्र में पिस गया होता। शिवाजी और छत्रसाल उन दिनों समाज और आदेश का पुनर्निर्माण कर रहे थे, जर्जर राष्ट्र को संगठित कर रहे थे।

भूषण के हृदय में स्वदेशानुराग कूट–कूटकर भरा हुआ था, इसलिए भारत भ्रमण के समय जो देखा उसके प्रतिकार का दृढ़ निश्चय किया। भूषण भारतीय संस्कृति के अनन्य भक्त थे औरंगजेब जब भारतीय संस्कृति को नष्ट कर रहा था तो भूषण सांस्कृतिक परम्परा का स्मरण करते हुए शिवाजी की प्रशंसा करते है–

मच्छहु कच्छ में कोल नृसिंह में बावन में मनि भूषण जो है।
जों द्विज राम में जो रघुनाथ में जोडब कहनो बलरामहु को है।।
बौद्ध में जो अरू जो कलकी महें विक्रम हूबें को आगे सुनो हैं।
साहस भूमि आधार सोई अब श्री सरजा सिवराज में सो है।।

धर्म संस्कृति का एक प्रमुख अंग होता है। जब भारत के पुरातन वैदिक धर्म पर आघात हो रहा था। तब शिवाजी जो वैदिक धर्म के सुरक्षार्थ प्रयत्नशील थे। भूषण ने उनकी प्रशंसा करते हुए लिखा–

वेद राखे विदित पुरान परसिद्ध राखे,
राम–नाम राख्यो अति रसना सुधर में।
राजन की हद्ध राखी तेग बल सिवराज,
देव राखे देवल स्वधर्म राख्यो घर में।।

भूषण मनु, राम, कृष्ण, चन्द्रगुप्त, अशोक, हर्ष आदि के संस्कारों एवं रीति नीति से प्रभावित थे। शिवाजी की प्रशंसा में लिखा है–

जा दिन जनम लीन्हौ भू पर भूसिल भूप,
ताहि दिन जीत्यो अरि उर के उछाह कौ।
बीजापुर गोल कुण्डा जीत्यो लरिकाई ही मैं,
ज्वानी जीत्यो दिलीपति पातसात को।।

शिवाजी ने अपनी उदार राजनीति, पराक्रम के कारण देश–विदेश में धाक जमा ली थी। भूषण ने उनकी राजनीतिक कुशलता का वर्णन इस प्रकार किया है–

जोर रूसियान को है, तेग खुरसानहू को,

नीति इंग्लैंड, चीन हुमर महादरी।
हिम्मत अमान मरदान हिन्दु वानहु की,
हूम अभियान, हवसान–हद कादरी।।
भूषण मनत इमि देखिये महीतल पें,
वीर सिवराज सिवराज की बहादुरी।।

महाकवि भूषण ने तीन वीर काव्य लिखे 'शिवराज भूषण', 'शिवा – बावनी', 'छत्रसाल दशक' ये तीनों काव्य उदान्त वीर–भावना से परिपूर्ण है। शिवाजी ने दक्षिण भारत में राष्ट्र विरोधी शक्तियों का दमन करके एक सुख शान्तिदायक 'स्वराज्य' की स्थापना की थी, छत्रसाल मध्यभारत में तत्कालीन राष्ट्र–विरोधी सत्ता का मुकाबला करके सुख समृद्धिपूर्ण जीवन समाज को दिया।

औरंगजेब ने अपने पिता को कैद करके भाइयों को मारकर राजगदी प्राप्त की वह अपनी अनुदार राजनीति के जनता को असन्तुष्ठ बना रहा था उसके भय के मारे छोटे–छोटे राजा उसे चौथ–कर देते थे। शिवाजी अत्यन्त निपुण राजनीतिज्ञ में बीजापुर सरकार ने जब शिवाजी का बध करने अफजल खॉ को भेजा था, तो शिवाजी ने भी उसकी कूटनीतिज्ञ चाल का उत्तर कूटनीति से देकर स्वयं को बचाया भूषण की वीर भावना में आदर्श नायक के गुण हैं उनका वीर काव्य इतिहास कल्पना से संयुक्त भारतीय संस्कृति , भारतीय राष्ट्रीयता का दिग्दर्शन है। दो वीरों का जिस उत्साह से हिन्दु जनता स्मरण करती है उसी की व्यंजना भूषण ने की है। भूषण के काव्य में तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक चेतना विद्यमान है उन्होंने अपने काव्य का सृजन युगचेतना से अनुप्राणित होकर किया है उनके काव्य में लोक मंगल की भावना, राष्ट्रीय नवोत्थान की चेतना विद्यमान है। रीतिकालीन वीर काव्य स्वंतत्र रूप में आगे आया जिसमें देशभक्ति का भाव निहित है ऐतिहासिकता पर आघृत रीतिकालीन वीरकाव्य जनता के लिए प्रेरणा देने में प्रभावशाली सिद्ध हुआ।

संदर्भ ग्रंथ –
हिन्दी के प्राचीन प्रतिनिधि कवि
हिन्दी साहित्य का इतिहास
भूषण ग्रंथा वली भूमिका
राष्ट्र की उत्पत्ति और भारतीय राष्ट्रीयता – विपथगा, जनवरी 1962 पृ.25
शिवसिंह सरोज– ठाकुर शिवसिंह सेंगर तथा हिन्दी–साहित्य का प्रथम इतिहास
डॉ.सर जार्ज ग्रियर्सन
हिन्दी साहित्य का इतिहास – डॉ.नगेन्द्र